हिन्दू-बौद्ध एकता का ऐतिहासिक प्रमाण

श्री शिवराजसिंह चौहान की हालिया श्रीलंका यात्रा रामायण की पौराणिक गाथा का उत्सव

भारत में जन्मे दो धर्मों में सद्भाव

❐ चंदन मित्रा

शुक्रवार, 25 जून, 2010 को हमारे श्रीलंका पहुँचने से एक विशेष अवसर का संयोग जुड़ गया। करीब 2300 साल पहले आज के ही दिन सम्राट अशोक की संतानें महेन्द्रा और संघमित्रा भगवान बुद्ध के संदेशों के प्रसार और अपने महान पिता के साम्राज्य की सामाजिक सीमाओं को विस्तार देने के लिए इस प्रायद्वीप के किनारे पहुँचे थे। इस दिन श्रीलंका में सार्वजनिक अवकाश रहता है और राजधानी कोलंबो उत्सवी बाना धारण कर लेती है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य के रूप में, हमारे मेजबान, खासतौर से श्रीलंका के मित्रवत मंत्री श्री दिनेश गुणावर्द्धने ने एयरपोर्ट पर अगवानी करते हुए इस ऐतिहासिक संयोग का हमें बार-बार स्मरण करवाया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भी यह बताने में कोई देरी नहीं की कि उनका गृह जिला विदिशा है जिसके समीप प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ साँची स्थित है और विदिशा से ही सम्राट अशोक की संतानें श्रीलंका की यात्रा के लिए रवाना हुई थीं।

दूसरे दिन सुबह हम हेलीकाप्टर से सबसे पहले अशोक वाटिका के बाहरी क्षेत्र स्थित सीता एलिया और फिर दिवरूमपला पहुँचे जहाँ रावण की कैद से आजाद होने के बाद भगवान राम की अर्धांगिनी ने अपनी पहली अग्नि-परीक्षा दी थी। यह जानना दिलचस्प था कि इस सर्वाग्रही उपमहाद्वीप में विरोधाभासी किंवदंतियाँ किस तरह मिलती हैं और घुल-मिल जाती हैं। राम द्वारा श्रीलंका के राजा रावण को मारने के पहले उसे पराजित करने और उसकी सोने की राजधानी को ध्वस्त करने के बावजूद यहाँ सीता सबके लिए पूज्य हैं। अशोक वाटिका नाम के जिस उद्यान में रावण ने सीता को बंदी बनाकर रखा था, वहाँ उनका एक मंदिर बना हुआ है और अब सीता के अग्नि-परीक्षा स्थल पर श्रीलंका महाबोधि सोसायटी की पहल पर स्वामी दयानंद सरस्वती के सहयोग से सीता का भव्य मंदिर बनाया जाएगा।

दक्षिण-पूर्व एशिया के अधिकांश भागों की भाँति श्रीलंका में भी रामायण एक जीवंत गाथा है। इण्डोनेशिया जैसे मुस्लिम बहुल देश में भी रामलीला और रामायण जानी-पहचानी है और वहाँ भारत से भी ज्यादा उत्साह और उमंग से रामलीला का आयोजन एक सामान्य परम्परा है।

हिन्दू बहुल बाली प्रायद्वीप में भी ओडीसा के व्यापारियों की इस सुदूर प्रायद्वीप की वार्षिक यात्रा की स्मृति में कार्तिक पूर्णिमा को बाली यात्रा के रूप में मनाया जाता है। महेन्द्रा और संघमित्रा के श्रीलंका पहुँचने की स्मृति के उत्सव या बाली प्रायद्वीप की बाली यात्रा न केवल भारत और उसके सांस्कृतिक प्रभाव वाले एशिया के पूर्वी हिस्से के मध्य सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता को तो प्रमाणित करते ही हैं साथ ही हमारे देश के बाहर के लोगों द्वारा इन संबंधों को अपने इतिहास का हिस्सा मानने की प्रतिबद्धता भी बताते हैं। दुर्भाग्य से भारत में धर्म निरपेक्षता की एकांगी व्याख्या इस तरह के अवसरों को भी अवसरवादी और साम्प्रदायिक रूप दे देती है।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान को दो कारणों से श्रीलंका आमंत्रित किया गया था। पहला सीता माता के नये मंदिर के भूमि-पूजन और दूसरा साँची को अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में विकसित करने की योजना को अंतिम रूप देने के लिए। मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित साँची, जिसे धार्मिक पर्यटन के एक बड़े केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है, में बौद्ध परम्पराओं के अध्ययन के लिए शीघ्र ही एक विश्वविद्यालय स्थापित किया जायेगा।

मध्यप्रदेश शासन ने इस बौद्ध विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल साँची के स्तूपों के समीप 65 एकड़ भूमि चिन्हित कर ली है। मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान इस परियोजना को शीघ्र साकार करने हेतु उत्सुक हैं और उन्होंने साँची में इसी साल अक्टूबर-नवम्बर में होने वाले वार्षिक बौद्ध उत्सव के दौरान इस यूनिवर्सिटी का शिलान्यास किए जाने का प्रस्ताव किया है।

दोनों देशों के मध्य की सर्वाग्रही भावना को हमने वास्तविक अर्थों में तब महसूस किया जब हम दिवरूमपला, जहाँ सीता द्वारा पहली अग्नि-परीक्षा दिए जाने की मान्यता है, पहुँचे।

दिवरूमपला में रामायण पर केन्द्रित सुन्दर और ऐतिहासिक चित्रकृतियों से सज्जित एक बौद्ध विहार (मानेस्ट्री) अत्यन्त प्राचीनकाल से अवस्थित है। इस विहार (मानेस्ट्री) के बाहर पीपल के एक विशाल वृक्ष के साये में सीता की अग्नि-परीक्षा की स्मृति में एक छोटी संरचना बनी है। ताज्जुब यह है कि इस स्थल को सिंहली बौद्ध भिक्षुओं द्वारा अब तक संरक्षित रखा गया है। यहाँ बौद्ध विहार के प्रमुख ने सीता माता के नये भव्य मंदिर के भूमिपूजन स्थल तक ले जाने के पहले हमें इस परिसर का भ्रमण करवाने के साथ ही उससे जुड़े तथ्यों की जानकारी भी दी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के मार्गदर्शन और श्रीलंका के बौद्ध संतों के विशेष सहयोग से सीता माता के भव्य नये मंदिर के निर्माण का शिलान्यास समारोह बौद्ध और हिन्दू मंत्रोच्चारों के साथ पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनने और सीता के प्रति सम्मान के प्रदर्शन के लिए हजारों की संख्या में स्थानीय लोग भी एकत्रित हुए। विद्वानों के बीच अपनी ऐतिहासिकता संबंधी मत-मतान्तर के बावजूद सीता यहाँ लोगों की भावनाओं से जुड़ी हैं। सीता माता का यह नया मंदिर अपने निर्माण के बाद दोनों देशों की सभ्यताओं के सामाजिक संबंधों को तो दर्शायेगा ही, साथ ही यह मंदिर उस सद्भाव का भी उदाहरण होगा जिसके चलते उपमहाद्वीप में विभिन्न धर्म सह-अस्तित्व से रह सकते हैं।

श्रीलंका सरकार वर्तमान में एशिया की महानतम् गाथा रामायण से जुड़े विभिन्न स्थलों को जोड़ने की एक रामायण पथ के विकास पर काम कर रही है। उम्मीद की जाती है कि यह रामायण पथ जल्दी ही न केवल श्रीलंका प्रायद्वीप की यात्रा करने वाले हजारों भारतीयों के लिए एक अतिरिक्त पर्यटक आकर्षण का रूप लेगा, बल्कि रामसेतु के उस पार से आने वाले श्रद्धालु तीर्थ-यात्रियों को भी आकर्षित करेगा। रामसेतु नाम की यह सँकरी और उथली भूगर्भीय संरचना विमान से पाक जलडमरू में स्पष्ट दिखती है, जिसे अंग्रेजों ने एडम्स ब्रिज का नाम दिया था। यह एक विडंबना है कि तमिलनाडु की वर्तमान सरकार छोटे जहाजों के परिवहन के लिए इसे नष्ट करना चाहती थी।

हमें ज्ञात हुआ कि श्रीलंका के धर्मप्राण लोग अपने जीवन को तब तक अधूरा मानते हैं जब तक कि वे जम्बूद्वीप (भारत का प्राचीन नाम) की यात्रा कर विशेषकर बौद्ध धर्म से जुड़े स्थलों यथा कपिलवस्तु, सारनाथ (बोधगया) और साँची में प्रार्थना न कर लें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मध्यप्रदेश में एक बौद्ध सर्किट के विकास का वादा किया ताकि साँची आने वाले तीर्थयात्री बुद्ध और बुद्ध धर्म को राजधर्म बनाने और उसका उत्तर और पूर्वी भारत तक प्रसार करने वाले सम्राट अशोक से संबद्ध दूसरे स्थलों का भी आसानी से भ्रमण कर सकें।

श्रीलंका का हमारा यह संक्षिप्त प्रवास कई मायनों में आँखें खोल देने वाला रहा। हम श्रीलंका को समुद्र में स्थित एक द्वीप और तफरीह के लिए चमकती धूप और आकर्षक समुद्र तटों का आनंद लेने वाले द्वीप के रूप में ही जानते हैं, परन्तु मध्यप्रदेश के आकार के पाँचवें हिस्से के बराबर और केवल दो करोड़ की आबादी वाले इस छोटे-से देश में और भी बहुत कुछ है।

मैं यहाँ के बौद्ध संतों के ज्ञान की गहराई और बौद्धिक क्षमता के साथ ही खासतौर से इतिहास और हमारी साझा संस्कृति के संरक्षण की उनकी ललक से बहुत प्रभावित हुआ।

कैण्डी स्थित भगवान बुद्ध के दंत अवशेष के मंदिर के दर्शन इस संदर्भ में विशेष रोशनी डालने वाले रहे। इस भव्य मंदिर में दर्शनार्थियों की भारी भीड़ थी और हमें लगभग एक घंटे के इंतजार के बाद मंदिर के गर्भगृह में ले जाया जा सका जहाँ एक चमचमाती स्वर्ण मंजूषा में

भगवान बुद्ध का एक दाँत सुरक्षित है। यह पवित्र दाँत वर्ष में सिर्फ दो बार दर्शनार्थ रखा जाता है। यह संयोग है कि यह भव्य मंदिर शताब्दियों पहले कैण्डी के हिन्दू राजा ने बनवाया था। इस मंदिर और इसके पहले कोलम्बो के केलानिया मंदिर में जो गहरा भक्तिभाव हमने देखा वह इस द्वीप राष्ट्र की गहरी धार्मिक भावना को अभिव्यक्त करता है।

कोलम्बो स्थित महाबोधि सोसायटी के परिसर में तथा श्रीलंका के सबसे बड़े बौद्ध संप्रदाय के महानायक से कैण्डी में हमारी मुलाकात से यह बात और पुष्ट हुई कि विभिन्न धर्म बगैर किसी दुर्भावना और विरोध के फल-फूल सकते हैं। अपनी श्रीलंका यात्रा में हिन्दू और बौद्ध धर्म के बीच जो समानताएँ हमें दिखीं वह सही मायने में भारत के उन स्वघोषित नवबौद्धों की संकीर्ण और संघर्षवादी भावना को करारा जवाब है जो पेशेवर हिन्दू विरोधियों में बदल गये हैं और भारत में जन्मे दो महान धर्मों में दरार डालना चाहते हैं।

यह लेख पॉयोनियर (जुलाई-4, 2010) से साभार

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, संपादक और राज्यसभा सदस्य हैं।)